एमबीए मिल रही मंजिल, पूरे हो रहे सपने

छात्रों का बैकग्राउंड चाहे कोई भी हो, वह बिजनेस एडमिनिस्ट्रेशन का कोर्स कर इस क्षेत्र में अपना करियर बना सकते हैं। इसके बाद छात्रों के सामने हर इंडस्ट्री के दरवाजे खुल जाते हैं। वक्त के साथ मैनेजमेंट कोर्स में भी काफी बदलाव आ गया है। अब इसमें इंडस्ट्री और समय की जरूरत को समझा जा रहा है। इस कोर्स को इस तरह ढाला गया है कि युवाओं को नौकरी मिलने में कोई परेशानी न हो। एमबीए कोर्स और इसमें करियर पर नमिता सिंह की रिपोर्ट-

ग्रेजुएट मैनेजमेंट एडमिशन काउंसिल के ग्लोबल मैनेजमेंट एजुकेशन के पूर्व में हुए एक सर्वे की मानें तो बी-स्कूल ग्रेजुएट के लिए बाजार मजबूत है। सर्वे में पाया गया कि 50 प्रतिशत छात्रों को पढ़ाई पूरी करने से पहले ही नौकरी का प्रस्ताव मिला। अंतरराष्ट्रीय नियोक्ताओं की नजर भी एमबीए के काबिल उम्मीदवारों पर रहती है। वहीं बी-स्कूल भी मैनेजमेंट की नियमित पढ़ाई के साथ नई डिग्रियों की खोज में हैं। एसोचैम का एक सर्वे भी बताता है कि टॉप मैनेजमेंट इंस्टीट्यूट जैसे आईआईएम के ग्रेजुएट मोटे वेतन की तुलना में पसंदीदा जॉब प्रोफाइल का चयन करते हैं।

टाइम के डायरेक्टर उल्हास वैरागकर के अनुसार 'मैनेजमेंट इंडस्ट्री पूरी तरह से इकोनॉमिक ग्रोथ पर निर्भर है। स्टार्टअप के नए प्रोडक्ट एमबीए प्रोफेशनल्स की नई-नई भूमिकाओं को सामने ला रहे हैं। एशिया को भविष्य के मैनेजमेंट हब के रूप में देखा जा रहा है। अन्य देशों के बीच भारत व चीन प्रमुख रूप से प्रबंधन शिक्षा में अपनी जगह मजबूत करने में लगे हैं। अर्थव्यवस्था के बढ़ते महत्व, शिक्षा के उदारीकरण और उच्च शिक्षा में कॉरपोरेट घरानों के दखल की वजह से भारत इस क्षेत्र का प्रमुख खिलाड़ी बन कर उभरा है। नियोक्ताओं ने भी मोटा पैकेज देकर योग्य प्रोफेशनल्स के भरोसे को बरकरार रखा है। आईआईएम सरीखे प्रमुख बी-स्कूल भविष्य के प्रबंधकों की बेहतर खेप तैयार करने में जुटे हुए हैं।'

बन सकते हैं लीडर

रूट्स एजुकेशन के डायरेक्टर दीक्षांत सहरावत का कहना है कि एमबीए की पढ़ाई व्यवसाय को आगे बढ़ाने का गुर सिखा कर ही सीमित नहीं हो जाती, बल्कि भविष्य के सीईओ, एमडी, वाइस प्रेसीडेंट, डायरेक्टर आदि के गुर भी वे एमबीए के क्लासरूम में ही सीखते हैं। वैसे यह केवल व्यवसाय के असली मैदान में ही सीखने को मिलता है। आप सफल प्रबंधक तभी बन सकते हैं, जब आप में सृजनात्मक सोच, कुछ नया करने का हुनर, करेंट अफेयर्स का ज्ञान, बेहतर प्लानिंग और लीक से अलग हट कर काम करने का जुनून हो। स्वतंत्र रूप से सोचने और हालात के मुताबिक फौरन फैसले लेने की क्षमता आपको एक बेहतर प्रबंधक बना सकती है। इसके साथ ही प्रोफेशनल्स को नैतिक ज्ञान एवं सिद्धांत भी सीखने होते हैं। इसका उपयोग बिजनेस से संबंधित समस्याओं को हल करने में किया जाता है। छात्र यदि किसी कंपनी के लिए काम नहीं करना चाहते तो खुद का बिजनेस भी शुरू कर सकते हैं, क्योंकि यह कोर्स आपको एनालिस्ट और व्यवसायी बनने का गुर भी सिखाता है।

कई इंडस्ट्री में है मौका

एमबीए करने की इच्छा रखने वाले छात्रों के लिए हर इंडस्ट्री के दरवाजे खुले हैं। उनका बैकग्राउंड साइंस का हो या कॉमर्स या फिर आर्ट्स का, मैनेजमेंट एक ऐसा कोर्स है, जो हर फील्ड के छात्रों को लुभाता है। इंजीनियरिंग के छात्र बड़ी तादाद में यह कोर्स करते हैं। टॉप बी-स्कूलों जैसे आईआईएम अहमदाबाद और कोलकाता में पढ़ने वाले लगभग 90 प्रतिशत एमबीए छात्र इंजीनियरिंग की पृष्ठभूमि के हैं। बदलते वक्त के साथ मैनेजमेंट कोर्स में भी काफी बदलाव आया है। इस कोर्स में आज इंडस्ट्री और समय की जरूरत को समझा जा रहा है। यह युवाओं को नौकरी दिलाने में सहायक बन रहा है। बेशक इसकी मूल वजह आकर्षक सेलरी पैकेज है, लेकिन आज मैनेजमेंट के क्षेत्र का इतना विस्तार हो चुका है कि बैंकिंग, टूरिज्म, मीडिया, फार्मा सहित कई सेक्टरों में मैनेजरों की जरूरत बढ़ने लगी है। हर वर्ष कैट, मैट, एनमैट, जैट सहित प्रमुख प्रवेश परीक्षाओं में छात्रों की लगने वाली भीड़ भी इस बात की तस्दीक करती है।

संस्थानों के चयन में सावधानी

एमबीए की पढ़ाई से पहले छात्रों को इस बात की जरूर पड़ताल कर लेनी चाहिए कि वह जिस संस्थान से एमबीए करना चाहते हैं, उसकी प्रामाणिकता क्या है। अगर आपको आईआईएम सरीखे संस्थान में एमबीए में दाखिला मिला है, तब तो आपको चिंता करने की कोई जरूरत नहीं है, लेकिन यदि आप किसी प्राइवेट बी-स्कूल में दाखिला लेकर एमबीए करने की सोच रहे हैं तो आपको उस संस्थान के बारे में पूरी जानकारी इकट्ठा कर लेनी चाहिए। साथ ही आपको यह भी परखना होगा कि क्या एमबीए का कोर्स आपके लिए सही है। दुनिया भर के प्रमुख बिजनेस स्कूल जिस प्रवेश प्रक्रिया को अपनाते हैं, वहां सिर्फ प्रवेश परीक्षा पास करने और पेशेवर अनुभव से काम नहीं चलता। प्रबंधन के क्षेत्र में ऐसे उम्मीदवारों की तलाश रहती है, जिनकी सोच उनके आवेदन के माध्यम से झलके। एमबीए तब सबसे उपयोगी साबित होता है, जब वह छात्रों को अपने व्यावहारिक अनुभव को कोर्स कन्टेंट से जोड़ने की अनुमति देता है। यही वजह है कि दुनिया के टॉप बी-स्कूल न्यूनतम कार्य अनुभव की मांग करते हैं।

एमबीए ग्रेजुएट के फायदे

1. एमबीए ग्रेजुएट कर्मियों के करियर विकास की ज्यादा संभावना रहती है। कंपनियां अकसर मैनेजर स्तर के कर्मियों के चयन में एमबीए ग्रेजुएट उम्मीदवारों को ज्यादा महत्व देती हैं। एक अध्ययन में पता चला है कि कंपनी के एमबीए ग्रेजुएट कर्मियों की अन्य कर्मियों के मुकाबले ऊंचे मैनेजमेंट स्तर के पद तक पहुंचने की गुंजाइश सबसे ज्यादा रहती है।
2. एमबीए की शिक्षा के दौरान बनने वाले साथी निस्संदेह महत्वाकांक्षी और करियर बनाने में ध्यानरत होते हैं, जिनके साथ रिश्ते कायम रहने पर भविष्य में अनेक लाभ प्राप्त होने की संभावनाएं रहती हैं।
3. बेहतर नौकरी और पैसा एमबीए ग्रेजुएट को मिलने वाला बाहरी लाभ है। आंतरिक स्तर पर एक एमबीए ग्रेजुएट को व्यक्तित्व विकास के बेहतरीन अवसर मिलते हैं।
4. नौकरी पाने की होड़ में एमबीए ग्रेजुएट्स अन्य उम्मीदवारों की अपेक्षा ज्यादा फायदे में रहते हैं, क्योंकि नियोक्ता जानते हैं कि एमबीए ग्रेजुएट अनुशासित और महात्वाकांक्षी होते हैं और संस्थान को उनसे लाभ होगा।
5. एमबीए की शिक्षा के दौरान व्यक्ति असल जीवन में दूसरे कर्मियों से संबंधित प्रबंधन का कार्य करना सीखते हैं, जिसे अन्य अकादमिक कार्यक्रमों के जरिये प्राप्त नहीं किया जा सकता। इसका सीधा फायदा प्रोफेशनल जीवन में मिलता है।
6. एक एमबीए ग्रेजुएट कौशल और ज्ञान का इस्तेमाल खुद की कंपनी स्थापित करने में भी कर सकता है।

नुकसान

1. एमबीए की शिक्षा प्राप्त करना दूसरी अकादमिक शिक्षाओं के मुकाबले ज्यादा महंगा होता है, इसलिए एमबीए करने का निर्णय सोच-समझ कर करना चाहिए।
2. एमबीए की शिक्षा प्राप्त करने के लिए ऊंचे स्तर की प्रतिबद्धता की जरूरत होती है, जहां समय का बहुत महत्व होता है।
3. इसमें आरामतलबी की कोई जगह नहीं, इसलिए हाड़तोड़ मेहनत करनी पड़ती है। प्रोजेक्ट के अनुसार दिन-रात काम करना पड़ सकता है।
4. मंदी के वक्त बेरोजगारी और छंटनी के भी सबसे ज्यादा शिकार एमबीए कर्मी ही होते हैं।

आंकड़े जता रहे हैं चिंता

1.94 लाख उम्मीदवारों ने कैट परीक्षा दी थी 2013 में

1.85 लाख हो गई घट कर 2014 की प्रवेश परीक्षा में।

व्यापार संगठन एसोचैम की ओर से कराए गए एक ताजा सर्वेक्षण के अनुसार, 2013 में 1.94 लाख उम्मीदवारों ने कैट परीक्षा दी थी, लेकिन 2014 में यह घट कर 1.85 लाख रह गई। साथ ही आर्थिक मंदी, नई परियोजनाओं पर काम ठप होने, आधारभूत ढांचे, वित्तीय सेवाओं, रियल्टी और खुदरा जैसे प्रमुख क्षेत्रों के प्रति निवेशकों की दिलचस्पी घटने की वजह से दूसरी कतार के बिजनेस स्कूलों से निकलने वाले प्रोफेशनल्स के लिए रोजगार के मौके बेहद कम हो गए हैं। दो साल का समय और लाखों रुपये खर्च करने के बावजूद महज 08-10 हजार रुपये प्रतिमाह की नौकरी मिलने के चलते छात्र अब इस प्रोफेशन से दूर होने लगे हैं। उल्हास वैरागकर इसके पीछे धड़ाधड़ खुलने वाले बी-स्कूलों को जिम्मेदार मानते हैं। उनका कहना है कि विज्ञापनों के चक्कर में फंस कर छात्र इनमें दाखिला ले लेते हैं। ये स्कूल छात्रों से मोटी फीस तो वसूलते हैं, लेकिन क्वालिटी और प्लेसमेंट के नाम पर छात्रों को इनसे निराशा ही हाथ लगती है।

एमबीए के प्रमुख क्षेत्र

जैसे-जैसे एमबीए की मांग बढ़ती जा रही है, वैसे-वैसे उसका कार्यक्षेत्र भी विस्तृत होता जा रहा है। दिनोंदिन इससे संबंधित कोर्सों की संख्या बढ़ती ही जा रही है। एक दशक पहले तक एमबीए में गिने-चुने कोर्स होते थे, जबकि अब इसकी संख्या एक दर्जन से ऊपर चली गई है। यहां हम जानते हैं एमबीए के कुछ प्रमुख कोर्सेज के बारे में।

फाइनेंस

यह एमबीए का सबसे पुराना सब्जेक्ट है। इस कोर्स के दौरान छात्रों को कॉस्ट कटिंग, बजटिंग, इंटरनेशनल फाइनेंस और कैपिटल मैनेजमेंट जैसे विषयों की जानकारी दी जाती है। कोर्स के बाद किसी भी ऑर्गेनाइजेशन में फाइनेंस डिपार्टमेंट में जॉब मिल सकती है।

सेल्स एंड मार्केटिंग

आज हर छोटी-बड़ी कंपनी में सेल्स एंड मार्केटिंग से जुड़े प्रोफेशनल्स की जरूरत होती है। सेल्स एंड मार्केटिंग बिजनेस मैनेजमेंट का ही हिस्सा होता है, लेकिन कई जगह सेल्स के लिए अलग से कोर्स संचालित होते हैं। इस कोर्स के बाद प्रोफेशनल्स को विभिन्न उत्पाद बनाने वाली कंपनियों में रोजगार के अवसर मिलते हैं।

रूरल मैनेजमेंट

देश के कई प्रमुख बिजनेस स्कूलों में रूरल मैनेजमेंट में पीजी डिप्लोमा या एमबीए कोर्स उपलब्ध है। कोर्स कंप्लीट होने के बाद गवर्नमेंट डेवलपमेंट एजेंसी, एनजीओ, कोऑपरेटिव बैंक, इंश्योरेंस कंपनी, रिटेल कंपनी, मल्टीनेशनल कंपनी या रूरल कंसल्टेंसी और रिसर्च एजेंसी में जॉब के मौके मिलते हैं।

इंटरनेशनल बिजनेस

छात्रों के लिए इंटरनेशनल बिजनेस मैनेजमेंट शानदार करियर ऑप्शन है। कुछ वर्षों से मैनेजमेंट का यह क्षेत्र तेजी से उभरा है। आज कई संस्थान इससे संबंधित कोर्स चला रहे हैं। यह कोर्स करने के बाद इंटरनेशनल फाइनेंस, एनजीओ, एक्सपोर्ट-इंपोर्ट कंपनी, ट्रांसपोर्टेशन, बैंक, मार्केटिंग से जुड़ी कंपनियों में जॉब कर सकते हैं।

एचआर मैनेजमेंट

इंडस्ट्री में एचआर मैनेजमेंट से संबंधित प्रोफेशनल्स की काफी मांग है। कोर्स के दौरान छात्रों को मैनेजमेंट, ह्यूमन रिसोर्स मैनेजमेंट, ऑर्गेनाइजेशनल बिहेवियर की जानकारी दी जाती है, साथ ही मैनेजमेंट और ऑर्गेनाइजेशनल डेवलपमेंट के बारे में भी विस्तार से बताया जाता है।

रिटेल मैनेजमेंट

रिटेल इंडस्ट्री के देश में तेजी से विस्तार के मद्देनजर धड़ाधड़ हाइपर व रिटेल स्टोर खुल रहे हैं। उनमें खाने-पीने से लेकर रोजमर्रा तक की सारी चीजें मिलती हैं। कोर्स के बाद प्रोफेशनल्स ब्रांड मैनेजर, रिटेल मैनेजर, सेल्स मैनेजर, रिटेल बायर और प्रोजेक्ट मैनेजर जैसे एरिया में काम कर सकते हैं।

ब्रान्ड मैनेजमेंट

प्रतिस्पर्धा भरे इस माहौल में लगभग सभी कंपनियां अपने प्रोडक्ट की ब्रान्डिंग करने में मशगूल हैं। यही वजह है कि ब्रांड मैनेजमेंट से संबंधित एमबीए कोर्स की भारी मांग है। इस कोर्स में प्रोडक्ट की मार्केटिंग और उसे प्रेजेंट करने के तरीके के बारे में बताया जाता है। कोर्स के बाद प्रोडक्ट मैनेजर या ब्रांड डेवलपमेंट मैनेजर के रूप में काम कर सकते हैं।

सप्लाई चेन मैनेजमेंट

इस कोर्स के तहत इवेंट मैनेजमेंट, वेयरहाउसिंग और क्लाइंट्स या किसी कंपनी द्वारा मांगे गए तमाम तरह के मैटीरियल के ट्रांसपोर्टेशन की जानकारी दी जाती है। इसमें किसी भी स्ट्रीम के ग्रेजुएट एमबीए कर सकते हैं।

ऑपरेशंस

इस कोर्स के जरिये प्रोफेशनल्स प्रोसेस फ्लो मेनटेन करने के अलावा वेंडर और इंटर डिपार्टमेंटल रिलेशंस को बनाए रखने का गुण सीखते हैं। इंजीनियरिंग बैकग्राउंड के ज्यादातर छात्र ऑपरेशंस में एमबीए करते हैं, क्योंकि प्रोडक्ट डेवलपमेंट, प्रोसेस ऑप्टिमाइजेशन और डिजाइनिंग की जानकारी होने के चलते उन्हें ज्यादा दिक्कत नहीं आती।

इन्फॉर्मेशन टेक्नोलॉजी

यह कोर्स उन छात्रों के लिए डिजाइन किया गया है, जो इन्फॉर्मेशन और कम्युनिकेशन टेक्नोलॉजी से संबंधित प्लानिंग, डिजाइन, सेलेक्शन, इम्प्लिमेंटेशन और एडमिनिस्ट्रेशन को प्रभावी ढंग से मैनेज कर सकें। बिजनेस टीम में भी ये महत्वपूर्ण भूमिका अदा करते हैं।

मीडिया मैनेजमेंट

समय के साथ मीडिया मैनेजमेंट से संबंधित लोगों की मांग भी बढ़ती जा रही है। मीडिया मैनेजमेंट और कम्युनिकेशन मैनेजमेंट में एकाउंट प्लानिंग एवं मैनेजमेंट, ब्रांड मैनेजमेंट, मीडिया प्लानिंग मैनेजमेंट और मार्केट रिसर्च जैसे टॉपिक शामिल होते हैं। इस विषय से जुड़े प्रोग्राम के तहत छात्रों को मीडिया मैनेजमेंट के विभिन्न पहलुओं के बारे में विस्तार से जानकारी दी जाती है।

एग्री बिजनेस मैनेजमेंट

इस कोर्स में छात्र उन कंपनियों को मैनेज करने का गुर सीखते हैं, जो कंज्यूमर तक एग्रीकल्चरल प्रोडक्ट्स को पहुंचाने का काम करती हैं। एग्री बिजनेस सेक्टर की विशेष जरूरतों को ध्यान में रखते हुए छात्रों को मैनेजमेंट, मार्केटिंग और फाइनेंस की विस्तृत जानकारी दी जाती है।

हेल्थकेयर मैनेजमेंट

इससे संबंधित एमबीए में बिजनेस स्किल्स और प्रैक्टिस को कवर किया जाता है। इसमें हॉस्पिटल एडमिनिस्ट्रेटर, मेडिकल प्रैक्टिस मैनेजर, इंश्योरेंस कंपनी एग्जीक्यूटिव या इसी तरह की दूसरी भूमिका निभाने वाले प्रोफेशनल्स को जानकारियां दी जाती हैं।

सोच-समझ कर करें संस्थान का चयन

जब भी किसी संस्थान में दाखिला लेने की सोचें तो पहले यह पता कर लें कि उस संस्थान को समुचित रेगुलेटरी अथॉरिटी से मान्यता हासिल है या नहीं। जैसे टेक्निकल इंस्टीट्यूट्स को ऑल इंडिया काउंसिल फॉर टेक्निकल एजुकेशन से मान्यता लेनी होती है। इसी तरह यूजीसी, एमसीआई आदि भी रेगुलेटरी बॉडीज हैं। अगर प्राइवेट कॉलेज में दाखिला लेने जा रहे हैं तो इन बातों का विशेष ध्यान रखें-

क्वालिटी ऑफ फैकल्टी : कॉलेज में पढ़ाई की क्वालिटी का अंदाजा वहां की फैकल्टी से ही लगाया जा सकता है। जिस संस्थान में दाखिले की सोच रहे हैं, वहां यह जरूर देखें कि जिस विषय में दाखिला लेने जा रहे हैं, उस संस्थान में उसकी फैकल्टी कितनी क्वालिफाइड है। यह जानकारी वेबसाइट की बजाय कॉलेज जाकर या वहां के छात्रों से बात कर हासिल करें तो ज्यादा बेहतर होगा, जैसे- फैकल्टी मेम्बर्स वहां के नियमित कर्मचारी हैं या गेस्ट फैकल्टी के तौर पर काम कर रहे हैं।

इंफ्रास्ट्रक्चर देखें : छात्रों को अपनी ओर आकर्षित करने के लिए कॉलेज या इंस्टीट्यूट्स अपने ब्रोशर को काफी आकर्षक बनाते हैं। उसमें लाइब्रेरी, लैब, स्पोर्ट्स सुविधाएं, क्लासरूम के बारे में बड़े-बड़े दावे कर देते हैं, लेकिन दाखिले के बाद पता चलता है कि हकीकत कुछ और ही है, लेकिन तब तक बहुत देर हो जाती है। इसलिए दाखिला लेने से पहले ही पूरी जांच-पड़ताल कर लें।

इंडस्ट्री जुड़ाव : इन दिनों अकसर यह शिकायत सुनने को मिलती है कि कॉलेज की पढ़ाई से इंटरव्यू में सक्सेस नहीं मिलती। इंडस्ट्री की जो डिमांड है, उस पर छात्र खरे नहीं उतरते। इसलिए कोई भी कॉलेज चुनने से पहले यह मालूम करें कि उनका इंडस्ट्री के साथ टाईअप है या नहीं? आज अधिकतर संस्थानों-कॉलेजों में इंडस्ट्री से कनेक्शन बनाने को लेकर कोई मैकेनिज्म नहीं है, जबकि मार्केट और इंडस्ट्री की जरूरतों को देखते हुए कॉरपोरेट मेंटरशिप जैसे प्रोग्राम्स होने चाहिए। वैसे कंपनियां इंटर्नशिप प्रोग्राम्स के जरिये छात्रों को प्रैक्टिकल ट्रेनिंग देती हैं, लेकिन यह काम कॉलेज से शुरू हो जाना चाहिए, जैसे आईआईएम, आईआईटी या दूसरे बड़े संस्थानों में होता है।

प्लेसमेंट चेक करें : अमूमन कोई भी प्रोफेशनल कोर्स करने के पीछे छात्रों का मकसद सही जगह पर प्लेसमेंट हासिल करना होता है। प्लेसमेंट सेल होने का दावा तो सभी करते हैं, पर एनआईटी, आईआईटी, आईआईएम जैसे कुछेक बड़े संस्थानों को छोड़ कर अधिकतर का प्लेसमेंट रिकॉर्ड अच्छा नहीं होता। इसलिए संस्थान चुनने से पहले यह जरूर पता कर लें कि जिस कोर्स में एडमिशन लेने जा रहे हैं, उसमें उस संस्थान का ट्रैक रिकॉर्ड कैसा है। उसमें प्लेसमेंट के दौरान कौन कौन-सी कंपनियां आती हैं।